झांसी के संस्क्रान अशोक सिटी में चैतन्य चमत्कारी सांवलिया पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर का भूमि पूजन एवं भव्य शिलान्यास समारोह साआनंद संपन्न...

झांसी, राजेश जैन । अशांत मन को शांत करने, वाणी में समरसता घोलने, इंद्रियों पर विजय पाने एवं संयम धारण करने का प्रेरणा स्थल होता है जिनेंद्र देव का मंदिर ।

झांसी की संस्क्रान अशोक सिटी कानपुर ग्वालियर बायपास रोड़ पर चैतन्य चमत्कारी सांवलिया पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर का भूमि पूजन एवं भव्य शिलान्यास सैकड़ो वर्षों के लिए भक्तों को मानव जीवन की सार्थकता का बोध कराता रहेगा । यह आशीर्वचन संस्क्रान अशोक सिटी में जैन मंदिर के भूमि पूजन एवं भव्य शिलान्यास के अवसर पर 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी के परम प्रभावी शिष्य 108 मुनि श्री अविचल सागर जी महाराज एवं 108 मुनि श्री विहसन्त सागर जी ने अपने उद्बोधन में कहा, उन्होंने कहा कि मंदिर में प्रवेश करते ही भगवान के अनंत गुणों का स्मरण उनका त्याग, चिंतन एवं उनको भक्ति से निहारना यह सब मनुष्य के पापों को हरने वाला होता है इन्हीं सब से मनुष्य का कल्याण होता है। 108 मुनि श्री विहसन्त सागर ने कहा कि बिना जिन दर्शन के जैन धर्म अपूर्ण हैं युवा पीढ़ी को जैन धर्म की ओर मोड़ना उन्हें जैन धर्म का स्वरुप बताना एवं सिखाना आज की सबसे बड़ी प्राथमिकता है। इसलिए आवश्यक है कि प्रतिदिन देव दर्शन, भक्ति, स्वाध्याय, संयम प्रत्येक जैन अनुयायी अपनी सामर्थ्य के अनुसार अवश्य करें ।

इसके पूर्व 108 आचार्य श्री विद्यासागर महामुनिराजजी के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन झांसी के महापौर श्री रामतीर्थ सिंघल एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री भारत सरकार प्रदीप जैन आदित्य संस्क्रान मंदिर समिति के अध्यक्ष वीरेन्द्र कुमार जैन IFS डॉ.निर्देश जैन एवं संस्क्रान अशोक सिटी के महाप्रबंधक सचिन शर्मा ने किया। मंगलाचरण श्रीमती महिमा जैन एवं रितिका जैन ने संयुक्त रूप से किया इस अवसर पर भक्तों ने मुख्य शिला, स्वर्ण शिला, रजत शिला, ताम्र शिला, रत्नों एवं मंगलदीप आदि के साथ प्रतिष्ठाचार्यद्वय ब्रह्मचारी जय निशांत भैया एवं ब्रह्मचारी दीपक भैया टेहरका के कुशल निर्देशन में संपन्न हुआ। समारोह में मंदिर कमेटी के अध्यक्ष वीके जैन IFS, महामंत्री राजेश जैन, (सभासद नगर निगम) कोषाध्यक्ष डॉ. निर्देश जैन, निवाडी विधायक अनिल जैन, निवाड़ी जेल अधीक्षक विकास जैन, दिगंबर जैन पंचायत समिति के अध्यक्ष अजीत जैन, प्रकाशचंद जैन एडवोकेट, दिगंबर जैन महासमिति के कार्याध्यक्ष प्रवीण जैन, दीपचंद जैन, पावस जैन, इंजी. हुकुमचंद जैन, ललित जैन, सुभाष जैन, डॉ पी.के.जैन, डॉ. अक्षय जैन, डॉ.अभिषेक जैन, डॉ. जिनेंद्र जैन, डॉ. सिद्धार्थ जैन, डॉ.अमित जैन, डॉ.मुकेश जैन, डॉ. अंशुल जैन, डॉ. एमके जैन, डॉ. अर्पित जैन, दुष्यंत जैन, अंकित जैन, सी ए नमीश भंडारी, बाहुबली जैन, अशोक जैन, महेश चंद जैन, संजीव जैन, संदीप जैन, वीरेंद्र जैन शास्त्री, इंजी. के.सी.जैन, राजीव शिवाजी, विनोद जैन, गौतम जैन, संजय जैन, वरुण जैन, शिरोमणि जैन, यूथुप सर्राफ, दिनेश जैन, सौरभ जैन, प्रमोद जैन, आनंद जैन, सौरभ जैन, सलिल जैन, प्रभात जैन, श्रेयांश जैन, श्रीमती कमलेश जैन, श्रीमती राशि जैन, डॉ.रुचि जैन, श्रीमती भागवती जैन, श्रीमती अंजू जैन, श्रीमती देवी जैन, श्रीमती शशि जैन, श्रीमती अंजना जैन, श्रीमती राखी जैन, श्रीमती रजनी जैन, श्रीमती रचना जैन, श्रीमती दीप्ति जैन, श्रीमती आयुषी जैन, श्रीमती सुषमा सिंघल आदि समेत सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने एक-एक ईंट रखकर भव्य मंदिर निर्माण का संकल्प लिया। इस मंदिर के निर्माण होने से कानपुर ग्वालियर बायपास मार्ग पर साधु जनों के आगमन पर संत भवन और आसपास के जैन धर्मावलंबियों के लिए जैन मंदिर दर्शन की सुखद अनुभूति हमेशा होती रहेगी।

कार्यक्रम का सफल संचालन राजेश जैन 'सभासद' एवं राकेश जैन बरुआसागर ने संयुक्त रुप से किया।

भारतीय इतिहास में श्रमण संस्कृति का योगदान (प्रथम भाग)

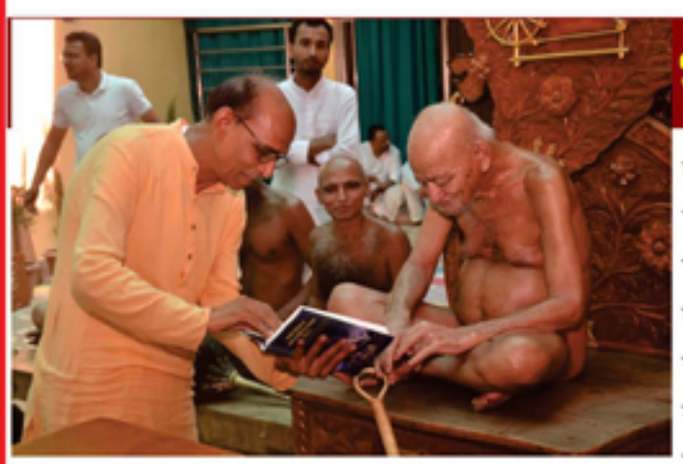

पटनागंज, म.प्र. में भेंट की, फिर 108 आचार्यश्री विशुद्धसागरजी के कर कमलों में भेंट कर असीम आशीर्वाद का संवर्द्धन किया । जन-जन के प्रेरणास्त्रोत व अधरों की मृदु मुस्कान से ही आनंद से ही अभिसिंचित करने वाले पूज्य 108 मुनि श्री अभयसागरजी महाराज को कृति भेंट कर आनंद की अनुभूति उन्होंने प्राप्त की । परम पूज्य 108 मुनिश्री प्रमाणसागरजी व अन्य साधुवृंद उनके इस विशाल लेखन के प्रेरणास्त्रोत हैं । इस कृति में श्री निर्मलजी ने तीर्थंकर नेमिनाथ, श्रीकृष्ण काल से प्रारंभ कर मौर्य वंश की गाथा कह सम्राट खारबेल के विश्वप्रसिद्ध हाथी गुफा शिलालेख की गाथा लिखी है। विश्व विजेता भगवान बाहुबली के पोदनपुर पर साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बौद्ध संस्कृति सहित अनेकों स्थान पर श्रमण संस्कृति को साक्ष्यों के साथ प्रस्तुत किया है । वैदिक संस्कृति में भी वेद, ब्राह्मण, उपनिषद, महाभारत आदि ग्रंथों पर भी उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है । डॉ. सुधीर रंजन इस पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं कि श्री निर्मलकुमार जैन ने भारतीय इतिहास में श्रवण संस्कृति के योगदान का विस्तार से उद्घाटन किया है, सबसे अच्छी बात है कि भारतीय परंपरा की सभी धातुओं को साथ जोड़कर देखने की प्रवृत्ति और कौशल, विग्रह का बिल्कुल अवकाश नहीं, श्रवण संस्कृति का कोई भी पक्ष न छूटे इसका भरपूर प्रयास है । लगातार जैन संस्कृति का प्रवाह दर्शाते हुए उन्होंने सिंधु घाटी की सभ्यता, मथुरा का कंकाली टीला, बासोकुंड (बिहार) राजगृही में जैन प्रतिमा व प्रतीकों की प्रमाणिक उपस्थिति को दर्शाया है । भारत से हजारों किलोमीटर दूर मिस्त्र, यूनान, पाकिस्तान, मंगोलिया, अफगानिस्तान, अफ्रीका, अमेरिका, वियतनाम में भी यही साक्ष्य उन्होंने प्रस्तुत किये हैं साथ ही श्रमण संस्कृति के प्रमुख पर्वों और कालांतर में उनके साथ जुडती हुई परम्परा और सामाजिक समरसता को प्रकट करने का सफल प्रयास किया है । लगभग 6 वर्ष के समर्पित श्रम का नवनीत यह कृति देश के श्रेष्ठ प्रतिष्ठान भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हुयी है । यह एक तथ्य भी इस कृति का प्रमाणिक, तथ्य परक व श्रेष्ठ होने का प्रमाण है । आवरण पृष्ठ पर कैलाश पर्वत एवं ऋषभदेव के पुत्र भारत द्वारा बनवाए गए घण्टे व वंदनवार के पावन चित्र संजोये इस कृति धर्म पिपासुओं, इतिहास वेत्ताओं व शोधकर्ताओं तथा जन-जन को एक नया आलोक व दिशा प्रदान करेगी । धरा के श्रेष्ठतम संतों के आशीर्वाद से अभिसंचित कृति के प्रकाशन पर श्री निर्मलकुमार जैन निश्चित रूप से बधाई, सम्मान एवं साधुवाद के पात्र हैं, उनके इस प्रयास से विदिशा नगरी एवं बुंदेलखंड गौरवान्वित हुआ है एवं इसके परिप्रेक्ष्य में श्रवण संस्कृति की प्राचीनता सभी के द्वारा सहज स्वीकारी जायेगी । श्री जैन का योगदान सदैव स्मरण किया जाएगा कृति के अगले भाग की हम सभी को प्रतीक्षा है। **-इंजी. अरुण कुमार जैन, फरीदाबाद**

समीक्षा : राजा बेटा (बाल उपन्यास)

बाल उपन्यास राजा बेटा,भाई अरुण कुमार जैन की कृति पारायण करने का मुझे अवसर मिला । जब पढ़ना प्रारम्भ किया तो एक साथ में ही पढ़ गया, इसलिए नहीं कि यह लघु कथा है, वरन इसलिए कि इसमें कुछ अद्भुत ही है । दरअसल इसे बच्चों की कृति कहना ही बचपना ही होगा, क्योंकि इसकी जरुरत बच्चों से कहीं अधिक बड़ों को है, जो संसार में बहुत लिप्त हैं। जिन्हें इन दिनों खासतौर पर आइसोलेशन में रहना पड़ रहा हो और बेवजह अवसाद से घिर रहे हो, उन्हें यह उपन्यास अवश्य पढ़ना चाहिए । कथा नायक दिनेश अनाथ होने पर पग-पग अनहोनियाँ झेलता है, पर उसकी मां के अंतिम समय में उससे कहे ये शब्द उसे टूटने नहीं देते कि 'तू तो मेरा राजा बेटा है, तू दिनेश है जो सारे संसार को प्रकाश व ऊर्जा देता है । और दिनेश अपनी अवस्था से भी अधिक परिपक्वता दिखाता है, वह रुकता नहीं, थकता नहीं, आत्मघात नहीं करता, चुकता नहीं, बुझता नहीं, गिरता है पर फिर उठ खड़ा होता है, गिर-गिर कर संभलता है और अंत में लेखक कथा को सुखांत कर पाठक को निराशा से उबरने में सफल होता है, प्रेरणा अत्यंत सारगर्भित है कि चिंता से आकुल व्याकुल होने से आपत्ति कम न होकर बढ़ सकती है और सामना करने से रास्ता निकलता ही है। ऐसा कोई अंधेरा नहीं जिसकी सुबह न हो पर रात का दीपक बनने की कला धैर्य से स्वयंमेव निकलती है. जिंदगी है तो सब कुछ हो सकता है अगर समाप्त कर लोगे तो सारे रास्ते स्वतः बंद कर लोगे ।

उपन्यास का प्रवाह और कथानक की तारतम्यता पाठक को बांधे रहती है. कभी कथा नायक बालक दिनेश के प्रति संवेदना जगाती है तो कभी घटनाओं पर गुस्सा लाने में भी कलमकार सफल हुआ है । कृति की भाषा और शैली रोचक और मुहावरेदार है. कभी-कभी बालक की बडों से अधिक समझदारी पाठक को उबाती भी है, पर योग दुयीग स्वभावी है यह सोचकर पाठक बोर नहीं होता।

पुस्तक के आकार और कीमत पर ना जाएं क्योंकि दोनों ही कम है पर पढ़ियेगा अवश्य। कथा आगे बढ़ने की ओर प्रेरित भी करेगी । आशा है कथा जगत में इसका स्वागत होगा., हाल ही में इसका दूसरा संस्करण चेन्नई से प्रकाशित हुआ है। अंग्रेजी संस्करण भी पाठकों के समक्ष आ चुका है ।

समीक्षक : पद्मश्री अलंकृत साहित्यकार श्री कैलाश मड़वैया, भोपाल

लेखक - इंजी. अरुणकुमार जैन, फरीदाबाद

विनम्र श्रद्धांजली

* श्री चंद्रेशकुमार जैन, विजयकुमार जैन एवं अजय कुमार जैन के पूज्य पिताजी **श्री प्रतापचंद जी मोदी** का देवलोकगमन दिनांक 26 मई को महरौनी में हो गया है आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्य में विशेष रूचि रखते थे ।
* स्व. श्री शांतकुमार के पुत्र एवं श्री धन्यकुमार के छोटे भाई व राजेश जैन, राकेश जैन (डब्लू), साकेत जैन के बड़े भाई **श्री कस्तूरचंद जी जैन (राख वालों)** का देवलोकगमन 7 मई को ललितपुर में हो गया आप सरल स्वभावी व धार्मिक कार्यों में रुचि लेने वाले व्यक्तित्व थे ।
* श्री प्रदीपकुमार जैन व प्रमोद जैन के पिताजी **श्री शिखरचंदजी जैन** का देवलोक गमन दिनांक 9 मई को उज्जैन में हो गया।

गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि...